लघुसिद्धान्तकौमुदी : अजन्तपुंलिङ्ग
रामशब्दरूप : चतुर्थ पत्र

पञ्चम कालांश

१४८ **ह्रस्वनद्यापो नुट्**

ह्रस्वान्तान्नद्यन्तादाबन्ताच्चाङ्गात्परस्यामो नुडागमः ।।

ह्रस्वान्त,नद्यन्त और आबन्त अंग से परे आम् को नुट् का आगम होता है।

१४९ **नामि**

अजन्ताङ्गस्य दीर्घः । रामाणाम् । रामे । रामयोः । सुपि – एत्त्वे कृते ।

अजन्त अंग को दीर्घ होता है नाम् के परे रहने पर।

१५० **आदेशप्रत्यययोः**

इण्कुभ्यां परस्यापदान्तस्यादेशस्य प्रत्ययावयवस्य यः सस्तस्य मूर्धन्यादेशः । ईषद्विवृतस्य सस्य तादृश एव षः । रामेषु । एवं कृष्णादयोऽप्यदन्ताः ।।

इण् और कवर्ग परे अपदान्त जो आदेश रूप सकार अथवा प्रत्यय का अवयव जो सकार उसके स्थान पर मूर्धन्यादेश हो।
रामेषु । अव्युत्पन्न राम शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् से प्रातिपदिक संज्ञा तथा व्युत्पन्न राम शब्द की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा हुई। सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ से बहुत्व विवक्षा में राम राम राम इन तीन राम में से एक राम शेष बचा। ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च सूत्र की सहायता से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङे-भ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् से बहुत्व की विवक्षा में सुप् विभक्ति आयी। हलन्त्यम् से सुप् के पकार की इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप हुआ। राम + सु हुआ। बहुवचने झल्येत् से मकार के अकार को एकार आदेश हुआ रामे + सु हुआ।

आदेशप्रत्यययोः से सु के सकार को षकार आदेश हुआ। यह सकार तथा शकार का एक ही प्रयत्न हैं अतः स्थान साम्य होने से स के स्थान पर ष आदेश होकर रामेषु रूप सिद्ध हुआ।

साजन कुमार